ISSN - 2279-0519
An International Refereed
Quarterly Research Journal

वर्ष - 17
अंक - 1

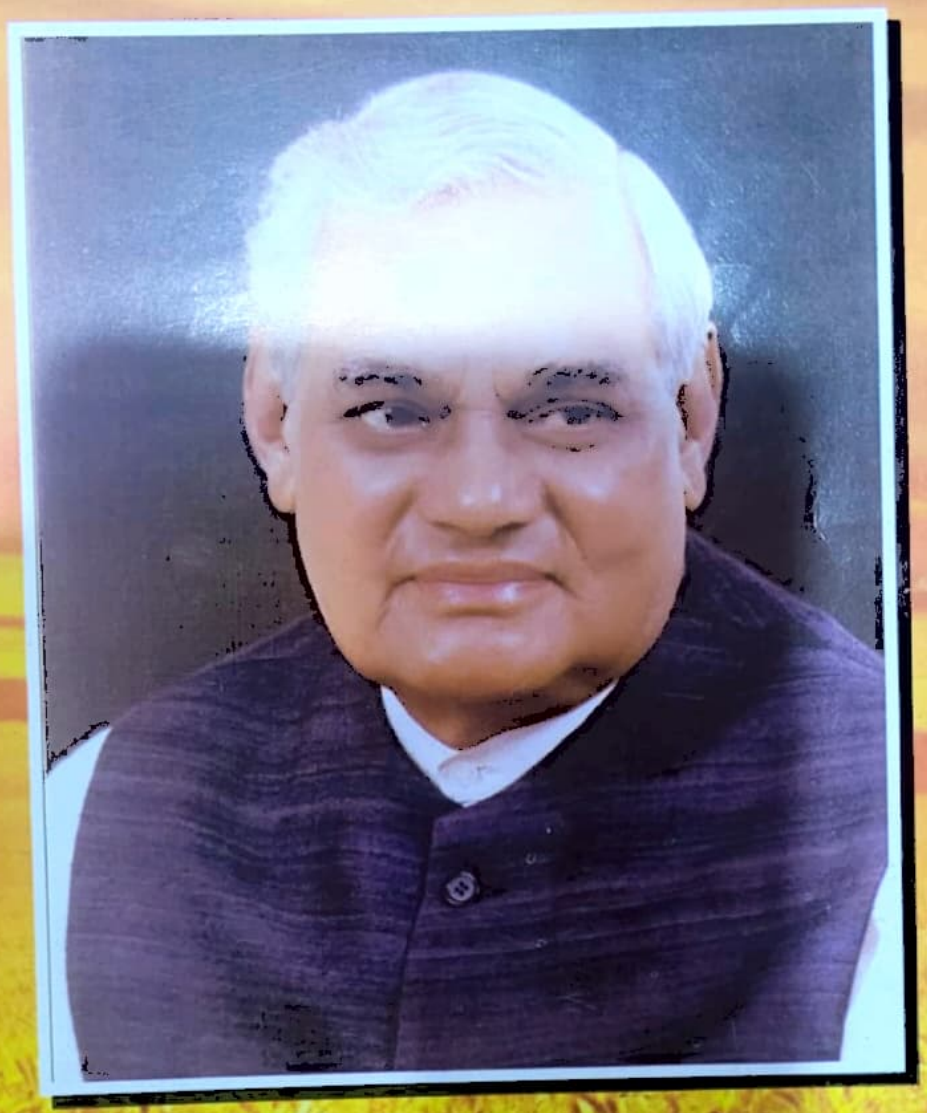

# व्रज नन्दिनी

(त्रैमासिक)

E-mail: jpsharma0169@gmail.com

**सरंक्षक मण्डल:**
डॉ. बनवारी लाल शर्मा
डॉ. वी. के. शर्मा
डॉ. रोशन लाल जी

**सम्पादक मण्डल:**
डॉ. जगदीश शर्मा, डी.लिट् (प्रधान सम्पादक)
डॉ. वी.के. सारस्वत
डॉ. डी.एन. त्रिपाठी
प्रो. एम.एम. अग्रवाल

**सह सम्पादक :**
डॉ. कमल कौशिक, डॉ. मंजू बघेल

**परामर्श-दात्री समिति:**
नीलमणि शर्मा
डॉ. प्रणव शर्मा
डॉ. नटवर नागर
डॉ. वी. के. जिंदल
डॉ. धर्मेन्द्र अग्रवाल
डॉ. ए. के. त्रिवेदी, प्राचार्य राजाजी कॉ. ऑफ एजू., चेन्नई
आचार्य डॉ. बाबू लाल मीना, भरतपुर
डॉ. भुवनेश चौधरी
डॉ. भगत सिंह

**चित्रांकन:**
श्री राकेश कुमार शर्मा (चित्रकला अध्यापक)

**विषय विशेषज्ञ :**
प्रो. अनीता त्यागी (संस्कृत)
डॉ. नरेश कुमार (शिक्षा शास्त्र)
प्रो. मंगला रानी (हिन्दी)
डॉ. सुरचना त्रिवेदी (संस्कृत)
डॉ. के. के. वर्मा (अर्थशास्त्र)

**संस्थापक:**
स्व. डॉ. अमियचन्द्र शास्त्री 'सुधेन्दु'
अध्यक्ष: ब्रज चेतना समिति (पं.सं. 982/2005-06)
मणिकुटीरम्, कमला नगर, बाईपास (बाह्यपथ)
कोसीकलाँ- 281403 मो0 9411891236

स्वत्त्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा,
रूक्मिणी विहार, मथुरा, से प्रकाशित एवं
मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा से मुद्रित

ओ3म्
"विद्ययाऽमृतमश्नुते"

# ब्रज नन्दिनी

**ISSN. 2279-0519**
Three Month Refeared
International Research Journal
**वर्ष- 17 अङ्क: 1**
**जुलाई 2019 से सितम्बर 2019 ई.**
मूल्य: एक प्रति 50 रूपये वार्षिक 200 रूपये
आजन्म सदस्यता-2000/- (भारत में) 2000/- (विदेश में)
**www.vrijnandini.org**

## मंगलाचरणम्

**त्वामग्ने! पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत।**
**मूर्ध्नो विश्वस्य वाधत।।**

सामवेद-1/1 प्रथम अध्याय/नवाँ मन्त्र

पदार्थ:-
त्वाम्= तुम, अग्ने= हे परमेश्वर, पुष्करादधि=हृदयाकाश में अथर्वा= महान् अहिंसक योगी, निरमन्थत= प्रात: करता था (देखता है) मूर्ध्न= मूर्त पदार्थो के आधार भूत, विश्वस्य= संसार के (मध्य में), वाधत= मेधावीजन।

संस्कृत पद्यानुवाद:
हृदीक्षते प्रभुं योगी, -डॉ. अमियचन्द शास्त्री
मेधावी लोक-मध्यगम्।
नमस्कुर्वे तमेवाऽहं
सर्वव्यापकमीश्वरम्।।

भावार्थ- हे परमेश्वर! महान् अहिंसा व्रती योगी तुझे हृदयाकश में देखते अथवा प्राप्त करते हैं और मेधावी जन तुझे मूर्त पदार्थो के आधार भूत संसार के मध्य में देखते हैं। -महर्षि स्वामी दयानन्दभाष्य

# विषयानुक्रम


| | |
|---|---|
| सम्पादकीय | प्रधानसम्पादक |
| Economic thoughts of Gandhiji | Smt.Renu Upadhyay |
| आज तो यमुना को बोलने दो | कुहू बजाज |
| निरक्षरता एक अभिशाप | डॉ. एम.एम. अग्रवाल |
| एकात्ममानववाद के प्रणेता पं0दीनदयाल | डॉ. मंजू बघेल |
| संस्कृत वाङ्मय में निबद्ध | डॉ. रांजय शर्मा |
| सामाजिक चिन्तन एवं विश्वअभ्युदय | डॉ. ममता शर्मा |
| कबीर और रहस्यवाद | |
| स्वामी विवेकानन्द के अनशिक्षासंबंधी | कैलाश कौशिक |
| विचारों की प्रासंगिकता | डॉ. वी. के. जिन्दल |
| राजयोग की श्रेष्ठता | डॉ. सीमा |
| पुराणों का हिन्दसाहित्य पर प्रभाव | डॉ. नटवर नागर |
| लोकरंगमंच के प्रहसन | डॉ. बबीता जैन |
| वैदिककालीन राजनीतिक संस्था सभा का एक अध्ययन | डॉ. प्रदीप त्रिपाठी |
| संस्कृत का वैश्विकस्वरुप | डॉ. सोमकान्त त्रिपाठी |
| संस्कृत वाङ्मय में व्रज | |
| अटल बिहारी बाजपेयी के | डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा |
| गद्यसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना | |
| अटलबिहारी बाजपेयी के साहित्यों | डॉ. कमल कौशिक |
| राष्ट्रीय चेतना के स्वर | |
| Philosophy and spiritual vision | Dr. Sanjay Sharma |
| of Shri Aurbindo | डॉ. दिवाकर चौबे |
| हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीयता | |
| पाठ्यकम का बालकों के व्यक्तित्व | डॉ. वी.के. सारस्वत |
| विकास में योगदान | |
| वर्तमानसदी की चुनौतियां और गांधी दर्शन | डॉ. प्रवीण अग्रवाल |
| की प्रासंगिकता | डॉ. सुशील कुमार शुक्ल |
| अथर्ववेद में मणिचिकित्सा | प्रो. डॉ. धर्मानन्दराउत |
| मानवजीवनेपुराणानां महत्वम् | |
| अथर्ववेद में वर्णित रोग औषधि और | डॉ. सुधांशु शेखर पण्डा |
| मणि का प्रभाव | कुमार विनायक |
| आंग्लसाहित्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव | चन्द्रभान यादव |
| हिन्दी की विश्वजनीनता | डॉ. ब्रज नन्दन सिंह |
| लैनिनामृतम् के आधार पर रूस का प्राकृतिक स्वरूप | |

# मानवजीवने पुराणानां महत्त्वम्

– प्रो0 डॉ. धर्मानन्द राउत
लाल बहादुर शस्त्री केन्द्रिय संस्कृत विद्या पीठ नई दिल्ली

पुराणानि भारतीयायाः संस्कृतेः सभ्यतायाः भारतीयजन जीवनस्य च प्रदीपाः सन्ति। एतैरेव भारतीय संस्कृतिः सभ्यता च याथातथ्येन अवगन्तुं श्शक्येते। पुराणेषु भारतीयानां पुरातन व्यावहारिको ज्ञाननिधिः मानवजीवनस्य च परमं सत्यं विराजेते। सम्प्रत्यपि भारतीय धर्मस्य अत्रत्यमानवजीवनस्य मूलाधारः पुराणसाहित्यमेव। अत एव भारतीयवाङ्मये पुराणानां विशेष समादरोऽस्ति। पुराणानां विषये भागवतमेवं भणति–

''इतिहासपुराणं च पंचमो वेद उच्यते।

विषयेऽस्मिन् वायुपराणम् एवं ब्रबीति यत् चतुर्वेदनिशारदोऽपि पुराणज्ञानविहीनो बुधो विचक्षणपदं प्राप्तुं नार्हति–

''यो विद्याच्चतुरो वेदान् सांड्गोपनिषदों द्विजः।
न चेत् पुराणं स विद्यान्नैव च स्याद् विचक्षणः॥

वेदानाम् अर्थज्ञानाय पुराणानाम् अनेक्षास्ति–

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
विभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिन्यति॥

**पुराणशब्दार्थविमर्शः** पुराणशब्दों बुधैर्बहुधा व्याकृतः 1. पुराभवं पुराणम्–पुरा+अन, तुट् च। 2. पुराणम्–आख्यानम्। 3. यस्मात् पुरा अनति तदिदं पुराणम् 4. पुरार्थेषु आनयतीति प्रराणम्। 5. पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वैस्मृतम्। 6. विश्वसृष्टेरितिहासः पुराणम्। 7. पुराभवं पुराणं स्माद् धर्मार्थ् काम मोक्षदम्। श्रेयसे यद् मानवानां सर्वाभ्युदयःकारकम्॥

पुराणं पंचलक्षणम्– विष्णुपुराणं प्रतिपासविषयमाधारिकृत्य पुराणम् एवं आचक्षते–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंतचलक्षम्॥

<u>पुराणानां प्रतिपाद्यविषयाः–</u> पुराणेषु प्रधान्येन देवानाम् उपासना व्यपदिश्यते। प्रायेण ब्रह्मविष्णुमहेशादिदेवानां कालीलक्ष्मी सरस्वती प्रभृतम– देवीनां च सर्वोत्कृष्टता प्रतिपादितास्ति। एतेसु सृष्टेः फलयस्य च वर्णनम्, देवर्षिराजवंशनिरूपणम् मनोः मन्वन्तरस्य च चप्रतिष्ठापनम् प्रसिद्ध तीर्थस्थानानां तीर्थयात्रादीनां च वर्णनम्, व्रतजपोपवासादीनां चानुष्ठानानम्, धर्मदर्शन रानीतिसदाचारा दिविषयाणां विवेचनम्, व्याकरणकाव्यज्योतिषशास्त्रायुर्वेदादिशास्त्रीय विविधविषयाणां मंत्रयंत्रतंत्रकलाविज्ञानविषयैः सह पारिवारिक सामाजिका–र्थिकराजनैतिक विषयाणामपि सम्यक् वर्णनं कृतमस्ति। पुराणानां राष्ट्रप्रेम विख्यातमस्ति। एषां मातृभूमिभक्तिरनुपमेया। भारतवसुन्धरां प्रशंसंतो न सामान्याः जनाः अपितु दिवौकसाः किल गीतकानि गायन्ति। यथोक्तं विष्णुपुराणे–

गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते
भवन्ति भूयो मनुजाः सुरत्वात्॥

पुराणानि भारतीयजीवनं सम्यक् प्रभावयन्ति। पुराणेषु तद् विधानं वर्तते येन समाजस्य